POLITICAL SCIENCE Dep.
BA Part 1 (Hons), Paper 2

Dr. Husna Afra
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur

गोपाल कृष्ण गोखले —

गोपाल कृष्ण गोखले भारतीय राजनीति के एक एक महान उदारवादी नेता थे। उनका जन्म 1866 ई० में महाराष्ट्र में हुआ था। बचपन से ही वह असाधारण प्रतिभा के धनी थे। 1884 में उन्होंने स्नातक की परीक्षा पास की और अपना जीवन देश सेवा में लगाने का निश्चय किया। गोखले न्यायाधीश रानाडे के शिष्य थे। वह रानाडे को अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे।

गोखले 1889 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने तथा 1895 में कांग्रेस के मंत्री बने। 1902 ई० में गोखले केंद्रीय विधान परिषद के सदस्य बने। वहां पर उन्होंने नमक कर हटाने, अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा शुरु करने, सरकारी नौकरियों में भारतीयों के साथ समान व्यवहार करने, सरकारी खर्च को कम करने एवं भारत के आर्थिक मामलों पर ब्रिटेन के नियंत्रण को समाप्त करने की बात रखी।

1905 ई० में गोखले ने भारत सेवक समिति नामक एक संस्था की स्थापना की। इस संस्था

का उद्देश्य सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना था। 1905 ई॰ में बंगाल का विभाजन किया गया। गोखले ने बंगाल के बंटवारे की आलोचना की। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के आंदोलन को विशेष परिस्थिति में सही बताया।

गोपाल कृष्ण गोखले के विचार दादाभाई नौरोजी एवं फिरोजशाह मेहता से मिलते थे। राजनीति में वह सच्चे उदारवादी थे। उनका विचार था कि कांग्रेस को भारतीय प्रशासन में धीरे-धीरे सुधारों के लिए संवैधानिक आंदोलन करना चाहिए। उनका अंग्रेजों की न्याय भावना में पूर्ण विश्वास था। उनका मानना था कि अंग्रेज उसी समय भारत को तुरंत स्वशासन दे देंगे जब उनको यह विश्वास हो जाएगा कि भारतीय इसके योग्य बन गए हैं। गोखले ने ब्रिटिश नौकरशाही पर इस बात के लिए बल दिया कि वह केवल भारत पर शासन करने मात्र से संतुष्ट न रहें, बल्कि भारतीयों को इस योग्य बनाएं कि वे पश्चिम के स्तर के अनुसार स्वशासन सीख जाएं।

1905 ई॰ में बनारस के कांग्रेस अधिवेशन में गोखले सभापति चुने गए। भारत के प्रतिनिधि के रूप में वह अनेक बार इंग्लैंड गए। 1915 ई॰ में इस महान आत्मा का निधन हो गया।

Dr. Khusna Afra
Asst. Professor.

Scanned with CamScanner